Patrika (Indore), 13th November 2025, Page-06

#IIT

आइआइटी इंदौर में गूंजे अद्वैत के स्वर

वेदांत का स्वर और विज्ञान का अनूठा संगम

पत्रिका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. तेज रफ्तार और तकनीकी प्रगति के युग में जहां मानवता तनाव, प्रतिस्पर्धा और आत्म-विस्मृति के जाल में उलझती जा रही है, वहीं अद्वैत वेदांत का संदेश नई दिशा दिखा रहा है। इसी विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए बुधवार को आइआइटी इंदौर में प्रेरणा संवाद का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, संस्कृति विभाग, मप्र शासन ने आयोजित किया था। इसमें ब्राजील के प्रसिद्ध वेदांताचार्य पद्मश्री जोनास मसेट्टी और अद्वैत आश्रम मायावती के अध्यक्ष स्वामी शुद्धिदानंद ने भावी विश्व का दर्शन विषय पर विचार रखे। कार्यक्रम में वैज्ञानिक, प्रोफेसर, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे। संवाद के दौरान वक्ताओं ने कहा 'वेदांत केवल दर्शन नहीं, बल्कि मानवता का आधार है। यह विज्ञान व आत्मबोध का संतुलन बनाता है।'

वेदांत मानवता का सार्वभौमिक दर्शन है : आचार्य जोनास मसेट्टी

ब्राजील से आए पद्मश्री आचार्य जोनास मसेट्टी ने कहा, आज की दुनिया में लोग धन और सुख की खोज में हैं, लेकिन आत्मिक मूल्य भूल चुके हैं। हमें वेदांत को धर्म के रूप में नहीं, बल्कि मानवता के सार्वभौमिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। यही दर्शन एक बेहतर व्यक्ति और एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकता है। कल्पना कीजिए, यदि बच्चे उपदेशों की जगह एनिमेटेड कहानियों से नैतिक मूल्य सीखें तो यह शिक्षा उनके हृदय में गहराई तक बसेगी।

अद्वैत दर्शन मानवता के उद्धार का मार्ग : स्वामी शुद्धिदानंद

स्वामी शुद्धिदानंद ने कहा, अद्वैत केवल एक विचार नहीं, बल्कि मानवता के लिए जीवन का विज्ञान है। 1200 साल पहले जब समाज स्वार्थ और संघर्ष में डूब गया था, तब आचार्य शंकर ने अद्वैत के माध्यम से एकात्मता का संदेश दिया। आज वही स्थिति फिर बन रही है। वर्तमान हिंदू धर्म वास्तव में प्राचीन वैदिक धर्म का ही विस्तार है। वेद कहते हैं कि हर आत्मा में दिव्यता है। आत्मसंयम और साधना के माध्यम से हम उस दिव्यता का अनुभव कर सकते हैं।

राहुल वेल्लाल की भक्ति ने बांधा समां

कार्यक्रम का सबसे भावनात्मक क्षण तब आया जब कर्नाटक के प्रसिद्ध युवा गायक राहुल आर. वेल्लाल ने आचार्य शंकराचार्य द्वारा रचित स्तोत्रों का गायन किया। उन्होंने गणेश पंचरत्नम, शिव पंचाक्षर स्तोत्र, भवानी अष्टक, भज गोविंदम और काल भैरवाष्टक की प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्ति से भर दिया। उनकी आवाज ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। राहुल ने चार साल की उम्र में संगीत की यात्रा शुरू की थी और अब तक भारत सहित 10 से ज्यादा देशों में प्रस्तुति दे चुके हैं।